पाठ - 3

तिर्थयात्रा

विधा = कहानी
लेखक = श्री सुदर्शन

प्र.1 शब्दार्थ

नारी - हृदय स्त्री - मन
1 अनुभवी तजुर्बेकार
2 सहानुभूति हमदर्दी
3 मनोरथ इच्छा
4 मियाद कार्य विशेष के लिए निश्चित समय
5 अंदेसा आशंका
6 मुखमंडल चेहरा
7 दिव्य शक्ति ईश्वरीय ताकत
8 पाषण पत्थर
9 परिक्रमा चारों ओर चक्कर लगाना
10 मान्नता मनौती
11 अनुमान अंदाज़
12 कृतज्ञता अहसान
13 अधीर बेचैन
14

Scanned with CamScanner

प्र. 2 मौखिक ? प्रश्न-उत्तर

1 लाजवंती को अपना पुत्र अनोखा क्यों लगता था ?

उ० लाजवंती को अपना पुत्र अनोखा इसलिए लगता था क्योंकि इस के पहले उसके कई पुत्रों कि मृत्यु हो गई थी।

2 उसे अपने पुत्र की चिंता क्यों रहती थी ?

उ० उसे अपने पुत्र की चिंता इस लिए रहती थी क्योंकि उसके पुत्रों की भाँति कहीं उसे भी कुछ ना हो जाए। कहीं इसे भी कुछ न हो जाए इस लिए वह डरती थी।

3 लाजवंती के पुत्र को कौन-सी बीमारी हो गई ?

उ० लाजवंती के पुत्र को मियादी बीमारी हो गई थी।

4 वैद्य का क्या नाम था ?

उ० वैद्य का नाम दुर्गादास था।

5 इस पाठ के लेखक कौन है ?

उ० इस पाठ के लेखक का नाम श्री सुदर्शन था।

प्र.3 लिखित ?

1 गाँव की स्त्रियाँ बच्चे के लिए सदा चिंतित रहने वाली लाजवंती से क्या कहती थी ?

उ० गाँव की स्त्रियाँ कहती, "हमारे भी तो बच्चे हैं, तू ज़रा-ज़रा सी बात मे यो पागल क्यो हो जाती है ?"

2 दुर्गादास वैद्य को गाँव वाले लुकमान क्यो समझते थे ?

उ० दुर्गादास वैद्य को गाँव वाले लुकमान इसलिए समझते थे क्योकि वैद्य जी के हाथों सैंकड़ो मरीज स्वस्थ होते थे।

3 माँ हरो क्यों रो रही थी ?

उ० माँ हरो इसलिए रो रही थी क्योंकि उसकी बेटी की बारात के स्वागत के लिए मिठाई आदि का प्रबंध नही हो सका था।

4 अपना संचित धन देते हुए लाजवंती क्यों प्रसन्न हुई ?

उ० अपना संचित धन देते समय लाजवंती इसलिए प्रसन्न हुई थी क्योकि माँ हरो का दुख दूर करना तीर्थयात्रा से भी बढ़कर था।

5 हरो और लाजवंती मे से आपको कौन-से पात्र ने प्रभावित किया ? कारण सहित उत्तर लिखो ?

उ० हरो और लाजवंती पात्र मे से मुझे लजावंती पात्र ने बहुत प्रभावीत किया क्योकि उसका त्याग महान है। उसने तीर्थयात्रा की तैयारी होने के बाद भी वहां न जाकर उसने सारे पैसे हरो को उसकी बेटी के विवाह के लिए दे दिये।

प्र: 3 "परहित सरिस धरम नहि भाई" इस विषय पर एक अनुच्छेद

महर्षि वेद व्यास ने जब अठारह पुराणों कि रचना कर दी तब उनके शिष्य ने एक प्रश्न किया " हे महर्षि। कलयुग में लोगों के पास इतना समय कहां होगा कि वे आपके इन अठारह पुराणों को पढ़ सकें।" महर्षि वेद व्यास ने तुरंत उत्तर दिया, "तुम अभी अज्ञानि हो" सुनो -

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

अर्थात- अठारह पुराणों में व्यास जी ने सिर्फ दो बात ही कही है परोपकार ही पुण्य है और दुसरे को कष्ट ही पाप है।

इस कथन का यह तात्पर्य है की इस संसार में दुसरों की भलाई के सामने कोई पुण्य नही है और दुसरों को कष्ट देना पाप है।

अत: हम लोग बड़े होकर जीवन के किसी भी क्षेत्र मे कार्य कर रहे हो, तुलसी दास जी कि यह पंक्तियाँ -

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥
परहित बस जिनके मन माँही।
जिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कुछ नाही॥

को कभी न भूलें।

28/06/19

①

PAGE NO.

Book Activity

(1) सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाओ ?

(क) हेमराज [✓]
(ख) रामलाल [✓]
(ग) मुलतान [✓]
(घ) इच्छा [✓]
(ङ) तीर्थयात्रा [✓]

(2) रिक्तस्थान की पूर्ति करो ?

(क) नारी हृदय
(ख) अनुभवी
(ग) लुकमान
(घ) मुलतान
(ङ) प्रसन्नता

(3) वाक्य बनाओ ?

(क) अनुभवी → श्री दुर्गादास अनुभवी वैद्य थे।
(ख) सहानुभूति → दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना चाहिए।
(ग) परिक्रमा → लाजवंती ने मंदिर की परिक्रमा की
(घ) कृतज्ञता → माँ हरो की आँखों में कृतज्ञता के आँसू थे
(ङ) अधीर → संकट के समय अधीर नहीं होना चाहिए,

भाषा कौशल

(1) अर्थ लिखो ?

जरा = बुढ़ापा — बाग = बगीचा
ज़रा = थोड़ा — बाग़ = लगाम
फन = साँप का मुख — खाना = घर, स्थान
फ़न = हुनर — खाना = भोजन

Scanned with CamScanner

(2)

PAGE NO.:

(2) विलोम शब्द =>

जीवन – मरण	भय – निर्भय
हानिकारक – लाभदायक	सावधान – विश्राम
आशा – निराशा	स्वस्थ – अस्वस्थ
मान – अपमान	धैर्य – अधैर्य
कृतज्ञ – कृतघ्न	आवश्यक – अनावश्यक

(3) मुहावरों का अर्थ वाक्यों में प्रयोग।

(क) पैरों के नीचे धरती खिसकना -> बहुत अधिक घबरा जाना।
वाक्य प्रयोग -> हेमराज को बीमार देखकर लाजवंती के पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक गई।

(ख) डूबे हुए हृदय को सहारा मिलना -> संकट में थोड़ी सहायता मिलना।
वाक्य प्रयोग -> वैद्य जी के सांत्वना भरे शब्दों को सुनकर लाजवंती के डूबे हुए हृदय को सहारा मिलता था।

"गृहकार्य"
प्रश्न-उत्तर एक कॉपी में लिखकर याद करें।
BOOK के सभी अभ्यास याद करें।

Scanned with CamScanner